Dr. Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Marwari College
Darbhanga

Economics D.I sub Lecture-18

Determination of Money Supply and Demand

मुद्रा पूर्ति के निर्धारक तत्व एवं मांग

मुद्रा प्राचीन काल से ही वस्तु विनिमय के माध्यम का कार्य करता आ रहा है साथ ही लोग इसे मूल्य संचय के लिए एवं ऋण चुकाने में सामान्यतः स्वीकार करते हैं मुद्रा की पूर्ति का अर्थ होता है कि किसी विशेष समय में अर्थव्यवस्था में मुद्रा की कुल मात्रा का प्रचलन कितना है। मुद्रा की पूर्ति में करेंसी, सिक्के मांग जमा आदि शामिल किये जाते हैं। अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति के निर्धारण पर जिन तत्वों का प्रभाव पड़ता है इनमें केन्द्रीय बैंक एवं उसकी नीतियाँ तथा आर्थिक क्रियाओं की स्थिति एवं उसमें परिवर्तन प्रमुख है। एक सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा की पूर्ति केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्धारित होती है इसे बाह्य कारण कहा जाता है दूसरे सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा की पूर्ति का निर्धारण देश की आर्थिक क्रियाओं में परिवर्तन द्वारा होता है। इन्हे आंतरिक कारण की संज्ञा दी जाती है। इन दोनों कारणों के अनुसार मुद्रा की पूर्ति के निर्धारक तत्व निम्नलिखित है।

1. न्यूनतम नगद रिजर्व अनुपात — मुद्रा के पूर्ति के निर्धारक तत्वों में न्यूनतम नगद रिजर्व अनुपात केन्द्रीय बैंक के पास उसके सदस्य बैंकों को अपने चालू तथा स्थायी जमा का कानून द्वारा निर्धारित एक निश्चित प्रतिशत केन्द्रीय बैंक के पास रखना पड़ता है, ऐसा इसलिए करना होता है कि केन्द्रीय बैंक अपने सदस्य बैंकों को उधार देने तथा बिलों का कटौती कर ऋण या साख सुविधा उपलब्ध कराता है। इस निर्धारित प्रतिशत को ही न्यूनतम नगद रिजर्व अनुपात कहा जाता है। भारत में न्यूनतम नगद रिजर्व अनुपात के अतिरिक्त कानूनी कोषानुपात Statutory Liquidity Ratio को मुद्रा पूर्ति के नियंत्रण के लिए अतिरिक्त उपाय के रूप में अपनाया गया है। इसके अंतर्गत व्यावसायिक बैंकों को अपनी कुल सम्पत्ति का एक भाग तरल रूप में रखना आवश्यक होता है।

   यदि केन्द्रीय बैंक इस न्यूनतम या कानूनी कोषानुपात में वृद्धि करता है तो व्यापारिक बैंकों के पास की मुद्रा की पूर्ति कम हो जाती है जब इस अनुपात को कम किया जाता है तो मुद्रा की पूर्ति को निर्धारित करने में न्यूनतम नगद रिजर्व अनुपात महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

2. बैंक आवश्यकता में परिवर्तन — बैंकों को केन्द्रीय बैंक के पास निश्चित अनुपात में मार्जिन मुद्रा रखनी पड़ती है। यह भी मुद्रा की पूर्ति को प्रभावित करती है। जब केन्द्रीय बैंक इस मार्जिन को बढ़ा देता है तो मुद्रा की पूर्ति उसके अनुपात में घटती है तथा जब मार्जिन आवश्यकता में कमी करता है तो उस अनुपात में मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाती है।

3. लोगों की नकद राशि जमा रखने की इच्छा — जब लोग अपने पास अधिक मात्रा में नकद रखना चाहते है तथा बैंकों में कम राशि जमा के रूप में रखते हैं तो मुद्रा की पूर्ति कम होती है इसके विपरित यदि लोग अपने पास कम नकद तथा बैंकों में अधिक जमा रखना चाहते हैं तो मुद्रा की पूर्ति अधिक होगी। ऐसा इस लिए होता है कि बैंक अधिक जमा राशि के आधार पर ही अधिक मुद्रा का निर्माण कर सकते हैं।

4. उच्च-शक्ति मुद्रा — व्यवसायिक बैंकों के पास जो रिजर्व की मात्रा होती है तथा लोगों के पास सिक्कों तथा नोटों के रूप में जो चलन की मात्रा होती है इन दोनों के योग को उच्चशक्ति मुद्रा कहा जाता है इसी के आधार पर बैंक जमाओं का विस्तार होता है। तथा बैंकों द्वारा मुद्रा साख का निर्माण होता है। जिसमें मुद्रा की मात्रा बढ़ती है। तथा मुद्रा की पूर्ति एवं उच्चशक्ति मुद्रा में सीधा संबंध है उच्चशक्ति मुद्रा के बढ़ने से मुद्रा की पूर्ति बढ़ती है तथा घटने से मुद्रा की पूर्ति घटती है, इस तरह हम पाते है कि मुद्रा की पूर्ति पर उच्चशक्ति मुद्रा का प्रभाव पड़ता है।

5. मुद्रा के चलन वेग का मुद्रा की पूर्ति पर प्रभाव — एक निश्चित अवधि में मुद्रा की एक

एक वर्ष में जितनी बार भुगतान करने के लिए प्रयोग किया जाता है उसे मुद्रा का चलन वेग कहते हैं मुद्रा के चलन वेग का भी मुद्रा की पूर्ति पर वही प्रभाव पड़ता है जो मुद्रा की मात्रा बढ़ाने में होता है। उदाहरण के लिए बीस रुपये का नोट पाँच बार विनिमय का कार्य करता है तो वह सौ रुपये के बराबर कार्य करता है। लेकिन इस बात को भी मुद्रा की पूर्ति को निकालते समय ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक इकाई का चलन वेग ही नहीं बल्कि औसत चलन वेग क्या है अन्यथा मुद्रा की पूर्ति का आकलन गलत होगा इस प्रकार स्पष्ट है कि मुद्रा की पूर्ति पर चलन वेग का प्रभाव पड़ता है

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति के निर्धारण में जिन तत्वों का प्रभाव पड़ता है उसमें केन्द्रीय बैंक एवं उनकी नीतियाँ तथा आर्थिक क्रियाओं की स्थिति एवं उसमें परिवर्तन प्रमुख हैं।

मुद्रा की मांग से आशय मुद्रा की वह मात्रा है जिसे लोग तरल या नकद के रूप में रखना चाहते हैं Demand for Money Means Demand of Money For Keeping in cash in Liquid From मुद्रा की मांग से सम्बंधित कई विचार हैं। इस विचार में क्लासिकल अर्थशास्त्रियों का विचार, कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों का विचार, केन्स का विचार तथा केन्सोत्तर अर्थशास्त्रियों का विचार प्रमुख हैं। क्लासिकल अर्थशास्त्रियों में इरविंग फिशर ने यह विचार व्यक्त किया की मुद्रा का मुख्य कार्य लेन-देन या विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करना है उन्होंने मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त दिया था। जिसमें उनका कहना है कि $MV = PT$. जिसमें M = चलन में कुल मुद्रा V = चलन वेग P = मूल्य स्तर T = कुल लेन-देन या सौदा, इस समीकरण में यह बताया गया कि मुद्रा की माँग कुल सौदे का मूल्य अर्थात PT पर निर्भर करता है, मुद्रा की मांग लोग विनिमय के लिए करते हैं यह मांग कुल सौदे के मूल्य का एक स्थिर हिस्सा होता है। मान लिया जाय की यह हिस्सा K है तथा मुद्रा की मांग Md है तो $Md = KPT$

कैम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा की मांग को स्पष्ट रूप से आय का एक हिस्सा माना है जिसे लोग नकद में रखने के लिए करते हैं $M = KY$ जिसमें M = मुद्रा की मांग K = हिस्सा Y = आय है इस स्कूल के अर्थशास्त्रियों ने निश्चित रूप से इस बात पर बल दिया है कि मुद्रा की मांग सिर्फ आय के स्तर पर निर्भर करता है नकदी के रूप में मुद्रा को रखने से धारक को लेन-देन में सुविधा होती है तथा उसको सुरक्षा प्राप्त होती है इस संबंध में केन्स ने अपना विचार व्यक्त करते हुए अपनी पुस्तक जेनरल थ्योरी 1936 में दिया है केन्स ने स्पष्ट रूप से तीन उद्देश्यों की चर्चा की है जिसके कारण लोग मुद्रा की मांग करते हैं

i. लेन-देन उद्देश्य — लोगों को आय एक निश्चित समय पर मिलती है लेकिन उन्हें व्यय प्रतिदिन करना पड़ता है इस लिए आय प्राप्ति एवं व्यय के बीच अंतराल को पाटने के लिए लोग अपनी आय का कुछ हिस्सा नकद रूप में रखना चाहते हैं।

ii. सुरक्षा उद्देश्य — भविष्य अनिश्चित एवं जोखिमों से भरा होता है लोग भविष्य की अनिश्चितताओं से बचने एवं सुरक्षा के उद्देश्य से अपनी आय का एक हिस्सा नकद रूप में रखना चाहते हैं। बीमारी, दुर्घटना, बेकारी इत्यादि से सुरक्षा के लिए जो मुद्रा की मांग करते हैं उसे सुरक्षा उद्देश्य से प्रेरित मुद्रा की मांग कहा जाता है। सुरक्षा उद्देश्य से की गयी मुद्रा की मांग भी आय पर निर्भर करती है

iii. सट्टेबाजी उद्देश्य — बहुत से लोग अपने साधनों मुद्रा से अधिक लाभ कमाना चाहते हैं। सट्टेबाजी उद्देश्य से की गयी मुद्रा की मांग का उद्देश्य बाजार की प्रवृत्तियों से अधिक लाभ कमाना है भविष्य में बाजार में सबसे अधिक लाभ को ध्यान में रखते हुए सट्टेबाजी उद्देश्य से प्रेरित मुद्रा की मांग की जाती है इस सम्बंध में केन्स का कहना है कि जब ब्याज की दर अधिक होती है तब सट्टेबाजी उद्देश्य से की गयी मुद्रा की मांग कम होती है लेकिन ब्याज दर कम रहने पर इस उद्देश्य से की गयी मुद्रा की मांग अधिक होती है लोग अपनी मुद्रा को अधिक लाभ वाले क्षेत्र में लगाना चाहते हैं जहां अधिक लाभ की संभावना दिखती है। इस तरह सट्टेबाजी उद्देश्य से की गयी मुद्रा की मांग ब्याज सापेक्ष होती है इस प्रकार इस क्रम में लोग अधिक से अधिक मुद्रा की मांग करते हैं और अधिक से अधिक नकद मुद्रा अपने पास रखने की कोशिश करते हैं कीन्स की जेनरल थ्योरी मुद्रा की मांग में सर्वोत्तम मानी जाती है।